

पद ८१

(राग: झिंजोटी - ताल: त्रिताल)

दृश्य पाहूं जातां ब्रह्मचि हैं दिसतें। खचित बाई चिद्रूप हैं दिसतें।
खचित बाई सद्रूप हैं दिसतें। खचित बाई प्रिय रूप हैं
दिसतें॥ध्रु॥ अमित गोल जडभूत शोधितां। चित्सत्ता कळते॥१॥

जागृति स्वप्न सुषुप्ति जाणतें। एकचि चेतन तें॥२॥ इन्द्रियभोग
विषयीं जें सुख तें। निजानंद स्फुरतें॥३॥ यापरि सकल जगासि
शोधिता। चिदानंद गमतें॥४॥ सत्सुख चिन्मार्तांड स्वरूपीं।
मृगजल हैं नटतें॥५॥